पोथी पढ़ि पढ़ि

मोहनदास की अंक तालिका

रामचंद्र गुहा

श्री जे. एम. उपाध्याय द्वारा संकलित और संपादित 'महात्मा गांधी एज़ ए स्टुडेंट' भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से सन् 1965 में छपी थी। इस छोटी-सी पुस्तक में गांधीजी के स्कूली दिनों की ऐसी कई जानकारियां दी गई हैं, जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं थीं। श्री उपाध्याय राजकोट के अल्फ्रेड हाई स्कूल में बरसों तक प्रधानाचार्य रहे थे। उन्होंने गांधीजी के जीवन के प्रारंभिक वर्षों (1875 से 1891) से संबंधित सामग्री को राजकोट के अलावा भावनगर, बंबई और लंदन से खोज निकाल इस सुंदर पुस्तक को तैयार किया था।

कॉलेज के दिनों में एक महान व्यक्ति की आत्मकथा मेरे हाथ लगी थी। उनका पूरा जीवन कमाल का था। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर और हमारी सरकार के वित्तमंत्री तक रह चुके थे। किताब में जितने पन्नों में उन्होंने केन्द्रीय बैंक में अपने काम, राष्ट्रीय बजट को बनाने-सुधारने से जुड़े अपने अनुभव साझा किए थे, उतने ही पन्नों में स्कूल, कॉलेज के अपने उम्दा प्रदर्शन का भी बखान किया था। हर परीक्षा में 96 प्रतिशत से ज्यादा नंबर! और फिर यह भी उन्होंने बहुत उत्साह से लिखा था कि कॉलेज में उनका बनाया रिकॉर्ड तो सालों तक कायम रहा।

यह सब पढ़कर मुझे अटपटा ही लगा था। बाद के दिनों में मैंने कई और आत्मकथाएं पढ़ीं। पता चला कि यह कोई अजूबा नहीं है। ऐसे बड़े बन गए सभी लोग न जाने क्यों स्कूली परीक्षाओं में अपनी सफलताओं को बहुत ज्यादा अहमियत देते हैं।

लेकिन फिर मेरे हाथ लगी एक अनूठी आत्मकथा— मोहनदास करमचंद गांधी की आत्मकथा। इसमें गांधीजी एक जगह कहते हैं, "हाई स्कूल में मुझे मूर्ख

नहीं समझा जाता था।" बस। आगे चलकर वे एक समय में संस्कृत और गणित में आई दिक्कतों का भी जिक्र करते हैं।

अपनी आत्मकथा में स्कूली जीवन के बारे में गांधीजी ने ज्यादा कुछ नहीं लिखा है। लेकिन 1965 में छपी एक किताब—महात्मा गांधी एज़ ए स्टूडेंट में इस विषय पर विस्तार से लिखा है। इस किताब के लेखक जे.एम. उपाध्याय हैं। वे राजकोट के उसी हाई स्कूल के प्राचार्य थे, जहां गांधीजी ने सात साल पढ़ाई की थी।

इस 74 पन्नों की किताब में बहुत-बहुत कुछ है। इस स्कूल में आने से पहले बालक गांधी कई स्कूल बदल चुके थे। अक्सर कक्षा में उनकी उपस्थिति भी बहुत कम रहती थी। श्री उपाध्याय की यह पुस्तक हमें बताती है कि तीसरी कक्षा में तो वे कुल 238 दिनों में 110 दिन ही स्कूल जा पाए थे। सालाना परीक्षाओं में उन्हें 45 से 55 प्रतिशत के बीच नंबर मिलते थे। छोटी कक्षाओं में शिक्षक श्री त्रिभुवनजी बड़े सख्त शिक्षक थे। बाद के समय में त्रिभुवनजी पहले बाबू फिर और बाद में राजकोट राज्य के मुख्यमंत्री भी बने। गांधीजी के बड़े भाई करसनदास का पढ़ाई का रिकॉर्ड तो और भी खराब था। बस यही एक वजह थी जिसने गांधीजी के दोस्तों के बीच उनकी साख बना दी थी। एक कक्षा में दो साल बिताने से करसन अपने छोटे भाई की कक्षा में आ गए थे।

45 नंबर के प्रश्न में 'खुशमिजाजी के फायदे' विषय पर एक लेख लिखना था। क्या यह संभव नहीं कि इसके जवाब ने गांधीजी को एक ऐसा राजनीतिज्ञ बनने को प्रेरित किया हो, जिसने किसी भी परिस्थिति में कभी भी आपा नहीं खोया? जीवन भर।

प्राथमिक से माध्यमिक शाला तक आते-आते हालात और खराब हो गए थे। कक्षा में गांधीजी की उपस्थिति और कम हो गई थी। कारण दो थे। छोटी-सी उम्र में विवाह हो गया था और फिर पिताजी बीमार पड़ गए थे। लेकिन जब उनसे एक साल और उसी कक्षा में रहने को कहा गया तो पहली बार पढ़ाई को लेकर गांधीजी गंभीर हुए। नतीजा यह रहा कि उन्हें 66.5 प्रतिशत के साथ कक्षा में आठवां स्थान मिला। यह आलम हाई स्कूल तक कायम रहा। वैसे इस वक्त कक्षा के बाहर के उनके जीवन में काफी उठा-पटक चल रही थी। नया-नया विवाह, मांसाहार चखना, करसनदास का कर्ज चुकाने के लिए घर से सोने को बेचने की असफल कोशिश करना। ताज्जुब यह कि बावजूद इसके कक्षा में उनकी उपस्थित 100 प्रतिशत रही। इस साल 60 प्रतिशत नंबर के साथ कक्षा में उनका चौथा स्थान रहा। लेखक के शब्दों में, "अब वे औसत छात्र नहीं रह गए थे।"

लेकिन अभी तो इस कथन की जांच होना बाकी थी। 1887 में मैट्रिक की परीक्षा देने मोहनदास रेल से पहली बार अहमदाबाद गए। इस परीक्षा के कुछ आंकड़े इस प्रकार हैं:

परीक्षा देने वाले कुल छात्रः 3097। सफल छात्रः 799। मोहनदास का स्थानः 404। बालक गांधी को प्राप्त अंकः अंग्रेजीः 89/200। गुजरातीः 45.5/100। गणितः 59/175। सामान्य ज्ञानः 54/150। इस तरह कुल 625 में से 247.5 नंबर मिले थे। प्रतिशन का हिसाब आप लगा लें: 40 प्रतिशत है यह। यानी एक बार फिर मोहनदास औसत छात्रों में शामिल हो गए थे।

'महात्मा गांधी एज़ ए स्टूडेंट' किताब को लेखक बिरादरी और गुजराती समाज काफी इज्जत देता है। इसमें अंक तालिकाओं के अलावा बहुत कुछ है। इससे पता चलता है कि परीक्षाओं में बेहद सामान्य प्रदर्शन के बावजूद उनके मिडिल स्कूल के शिक्षक ने उनके व्यवहार को 'बहुत अच्छा' पाया जबकि अच्छे नंबर लाने वाले छात्रों के व्यवहार को केवल 'अच्छे' की श्रेणी में रखा गया था। लेखक ने किताब में गांधीजी की मैट्रिक की अंग्रेजी परीक्षा का पर्चा भी दिया है। इसमें 45 नंबर के प्रश्न में 'खुशमिजाजी के फायदे' विषय पर एक लेख लिखना था। क्या यह संभव नहीं कि इसके जवाब ने गांधीजी को एक ऐसा राजनीतिज्ञ बनने को प्रेरित किया हो, जिसने किसी भी परिस्थिति में कभी भी आपा नहीं खोया? जीवन भर।

लेखक ने उन सब बातों को भी इस किताब में जगह दी है, जिनकी वजह से गांधीजी में सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना पैदा हुई होगी। हाईस्कूल के दिनों में गांधीजी का सबसे अच्छा दोस्त एक मुसलमान लड़का था, उनके हेडमास्टर पारसी थे। वे जिस स्कूल में पढ़ते थे, उसकी इमारत जूनागढ़ के नवाब द्वारा दान में दिए गए 63 हजार रुपए से बनी थी। अपनी स्कूली पढ़ाई के आखिरी दिनों में गांधीजी को ज्यादा नंबर मिलने लगे थे। इस कारण उनको छात्रवृत्ति भी दी जाने लगी थी। कितनी? उन्हें हर महीने 10 रुपए मिलते थे। यह छात्रवृत्ति काठियावाड़ के दो बड़े लोगों के नाम पर शुरू की गई थी। इनमें एक हिन्दू थे तो दूसरे मुसलमान। इस तरह गांधीजी को स्कूल में ही इतने धर्म के लोगों का साथ मिल गया था।

लेखक श्री रामचंद्र गुहा इतिहासकार हैं और
पर्यावरण और राष्ट्रीय आंदोलन पर लिखी इनकी पुस्तकें
खूब पसंद की गई हैं। इस वर्ष भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया है।